हिन्दी (क्षितिज-कृतिका) : कक्षा–10

इकाई–1

महत्वपूर्ण बिन्दु– *(1) निर्धारित इकाई से 1-1 अंक के 7 प्रश्न तथा 2-2 अंक के 3 प्रश्न तथा 04 अंक का 1 प्रश्न परीक्षा में पूछा जाएगा। (2) क्षितिज भाग 2 के काव्य खण्ड से 'देव के पद', 'यह दंतुरित मुस्कान', 'फसल' एवं संगतकारन कविता से परीक्षा में कोई प्रश्न नहीं पूछा जाएगा।*

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

(एक अंकीय)

प्रश्न 1. निम्नलिखित कथनों के सही विकल्प ज्ञात कीजिए–

(1) हिन्दी के पद्य साहित्य का दूसरा काल है–
(a) रीतिकाल (b) भक्तिकाल
(c) आदिकाल (d) आधुनिक काल

(2) आधुनिक काल का आरम्भ होता है–
(a) संवत् 1900 से (b) संवत् 1050 से
(c) संवत् 1375 से (d) संवत् 1800 से

(3) छायावाद के आधार स्तम्भ कवि नहीं है–
(a) निराला (b) जयशंकर प्रसाद
(c) महादेवी वर्मा (d) सूरदास

(4) प्रयोगवाद के कवि हैं–
(a) अज्ञेय (b) सुमित्रानन्दन पंत
(c) महादेवी वर्मा (d) तुलसीदास

(5) नई कविता के कवि हैं–
(a) निराला (b) सुमित्रानन्दन पंत
(c) महादेवी वर्मा (d) रघुवीर सहाय

(6) भक्तिकाल की समय सीमा है–
(a) संवत् 1050 से संवत् 1375
(b) संवत् 1375 से संवत् 1700
(c) संवत् 1700 से संवत् 1900
(d) संवत् 1900 से अब तक

(7) प्रयोगवाद का आरंभ माना जाता है–
(a) सन् 1943 से (b) सन् 1911 से
(c) सन् 1963 से (d) सन् 1936 से

(8) नंद–नंदन का प्रयोग किया गया है–
(a) उद्धव के लिए (b) गोपियों के लिए
(c) कृष्ण के लिए (d) सूरदास के लिए

(9) गोपियों को ज्ञान व योग की बातें लगती हैं–
(a) मधुर (b) नीरस
(c) कड़वी ककड़ी सी (d) अग्नि के समान

(10) गोपियों ने श्रीकृष्ण की तुलना की है–
(a) हारिल की लकड़ी से (b) नीम की लकड़ी से
(c) चंदन की लकड़ी से (d) तुलसी की लकड़ी से

(11) 'व्याधि' शब्द का अर्थ है–
(a) आधार (b) चिंता
(c) रोग (d) विरह

(12) सूर के पद में भाषा है–
(a) ब्रज (b) मैथिली
(c) खड़ी बोली (d) बघेली

(13) 'मरजादा न लही' के माध्यम से मर्यादा की बात कही है–
(a) समाज की (b) प्रेम संबंध की
(c) परिवार की (d) ग्राम घर की

(14) सूरदास के गुरू थे–
(a) नरहरिदास (b) विट्ठलनाथ
(c) हरिदास (d) बल्लभाचार्य

(15) सूर के आराध्य हैं–
(a) श्रीराम (b) नानक
(c) श्रीकृष्ण (d) शिव

(16) 'पुरइनि पात' का अर्थ है–
(a) कमल का पत्ता (b) कमल का फूल
(c) पूरी तरह (d) पुरवाई

(17) सूर की रचना नहीं है–
(a) सूरसागर (b) साहित्य लहरी
(c) सूरसारावली (d) विनय पत्रिका

(18) परशुराम को व्यंग्य भरे उत्तर दिए–
(a) राम ने (b) लक्ष्मण ने
(c) विश्वामित्र ने (d) जनक

(19) शिव–धनुष के टूटने पर क्रोधित हो उठे–
(a) विश्वामित्र (b) परशुराम
(c) लक्ष्मण (d) रावण

(20) रामचरितमानस की भाषा है–
(a) ब्रज (b) बुन्देली
(c) अवधी (d) मालवी

(21) राम–लक्ष्मण के गुरु का नाम था–
(a) परशुराम (b) विश्वामित्र
(c) भृगु (d) तुलसीदास

(22) सहस्त्रबाहु का वध किया था–
(a) राम ने (b) परशुराम ने
(c) लक्ष्मण ने (d) विश्वामित्र ने

(23) कवि अपनी आत्मकथा को बता रहा है–
(a) भोली (b) करुण
(c) सच्ची (d) सुंदर

(24) थके पथिक की पंथा में अलंकार है–
(a) उपमा (b) अनुप्रास
(c) यमक (d) रुपक

(25) छायावाद के प्रतिनिधि कवि हैं–
(a) जयशंकर प्रसाद (b) ऋतुराज
(c) सूरदास (d) धर्मवीर भारती

(26) प्रसादजी को 'कामायनी' पर पारितोषिक मिला–
(a) ज्ञानपीठ (b) दिनकर पारितोषिक
(c) सरस्वती सम्मान (d) मंगला पारितोषिक

(27) जयशंकर प्रसाद का संग्रह नहीं है–
(a) आकाशदीप (b) इंद्रजाल
(c) आँधी (d) साये में धूप

(28) उत्साह कविता में बादल प्रतीक हैं–
(a) शांति का (b) गति का
(c) क्रांति का (d) सुख का

(29) कवि ने बादलों को किसकी कल्पना के समान पाले हुए माना है–
(a) बाल कल्पना
(b) आसमान की कल्पना
(c) विद्युत की कल्पना
(d) काले घुंघराले बालों की कल्पना

(30) कवि ने बादलों के लिए विशेष प्रयोग किया है–
(a) अनन्त (b) ललिता
(c) नवजीवन वाले (d) मनमोहक

(31) कवि बादलों से बरसने का आह्वान कर रहा है–
(a) गोल–गोल घूमकर बरसने को
(b) आकाश को घेरकर बरसने को
(c) धीरे–धीरे बरसने को (d) तीव्र वेग से बरसने को

(32) कवि ने तृण धरा के माध्यम से संकेत किया है–
(a) जनसामान्य की पीड़ा (b) अत्यधिक गर्मी
(c) जलवायु परिवर्तन (d) वैश्विक तपन

(33) 'नाश और निर्माण' के रचनाकार हैं–
(a) निराला (b) नागार्जुन
(c) जयशंकर प्रसाद (d) गिरिजाकुमार माथुर

(34) गिरिजाकुमार माथुर के अनुसार प्रभुता का शरण बिम्ब है–
(a) मृगतृष्णा (b) गरिमा
(c) हीनता (d) कायरता

(35) नई कविता के समर्थ कवि हैं–
(a) प्रसाद (b) निराला
(c) पंत (d) गिरिजाकुमार माथुर

(36) 'लड़की जैसी दिखाई मत देना' से माँ का क्या आशय है–
(a) दुर्बलता को ताकत बनाने के लिए
(b) प्रताड़ित होने के लिए
(c) अन्याय सहने के लिए (d) दुर्बल होने के लिए

(37) 'सूरत निरत' काव्य संग्रह के कवि हैं–
(a) नागार्जुन (b) निराला
(c) ऋतुराज (d) महादेवी वर्मा

(38) 'कन्यादान' कविता में नारी के किस भाव की अभिव्यक्ति है–
(a) क्रूरता (b) संवेदनहीनता
(c) क्रोध (d) संवेदनशीलता

उत्तर–(1) भक्तिकाल (2) संवत् 1900 से (3) सूरदास (4) अज्ञेय (5) रघुवीर सहाय (6) संवत् 1375 से संवत् 1700 तक (7) सन् 1943 से (8) कृष्ण के लिए (9) कड़वी ककड़ी सी (10) हारिल की लकड़ी से (11) रोग (12) ब्रज (13) प्रेम संबंध की (14) वल्लभाचार्य (15) श्रीकृष्ण (16) कमल का पत्ता (17)

विनय पत्रिका (18) लक्ष्मण ने (19) परशुराम (20) अवधी (21) विश्वामित्र (22) परशुराम ने (23) भोली (24) अनुप्रास (25) जयशंकर प्रसाद (26) मंगला प्रसाद पारितोषिक (27) सावे में धूप (28) क्रांति का (29) बाल-कल्पना (30) नवजीवन वाले (31) आकाश को घेरकर बरसने को (32) जनसामान्य की पीड़ा (33) गिरिजाकुमार माथुर (34) मृगतृष्णा (35) गिरिजाकुमार माथुर (36) दुर्बलता को ताकत बनाने के लिए (37) ऋतुराज (38) संवेदनशीलता।

प्रश्न 2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

(1) सूर की भक्ति ..... भाव की है (साख्य भाव/दास भाव)

(2) सूरदास ..... थे। (जन्मांध/गूंगे)

(3) गोपियां उद्धव को ..... मानती हैं। (हतभागी/बड़भागी)

(4) गोपियों के लिए श्रीकृष्ण हारिल की ..... की तरह है। (लकड़ी/फूल)

(5) हरि है ..... पढ़ि आए। (राजनीति/कूटनीति)

(6) सूरदास का निधन ..... में हुआ। (रुनकता/पारसौली)

(7) गोपियों ने मधुर संबोधन ..... के लिए दिया। (कृष्ण/उद्धव)

(8) सूरदासजी मुख्यत: ..... रस के कवि हैं। (वात्सल्य रस/शांत रस)

(9) योग संदेश लेकर ..... मथुरा से बृजधाम आये हैं। (अक्रूर/उद्धव)

(10) 'छुअत टूट रघुपतिहु न दोसू' कथन ..... का है। (विश्वामित्र/लक्ष्मण)

(11) परशुराम स्वभाव से ..... थे। (क्रोधी/दयालु)

(12) रघुकुल में देवता, ब्राह्मण, ईश्वर भक्त और ..... का वध नहीं किया जाता था। (गाय/पक्षियों)

(13) ..... व्यक्ति अपनी प्रशंसा स्वयं ही करते हैं। (निडर/कायर)

(14) परशुराम के गुरु ..... थे। (भगवान शिव/भगवान विष्णु)

(15) कवि के सरल स्वभाव के कारण ..... ने धोखा दिया है। (मित्रों/रिश्तेदारों)

(16) आलिंगन में आते-आते .....जो भाग गया। (रुठकर/मुसक्या)

(17) निराला ने बादलों से ..... का आग्रह कर रहा है। (बरसने/नाचने)

(18) निराला ने बादलों को ..... के समान सुन्दर बताया है। (केशो/आँखों)

(19) उत्साह कविता की भाषा ..... है। (संस्कृतनिष्ठ खड़ी बोली/बघेली)

(20) निराला की अधिकांश रचनायें ..... छंद में मिलती हैं। (गीतिका/मुक्तक)

(21) दृविधाहत साहस का शाब्दिक अर्थ ..... है। (साहस होते हुए दुविधाग्रस्त रहना/बिना दुविधा के रहना)

(22) हर चंद्रिका में छिपी एक रात ..... है। (कृष्णा/सुंदर)

(23) कविता 'छाया मत छूना' में अतीत की स्मृतियों को भूल वर्तमान का सामना कर ..... का वरण करने का संदेश दिया गया है। (भविष्य/वर्तमान)

(24) 'छाया मत छूना' कविता में ..... भाव बोध की अभिव्यक्ति देखी जा सकती है। (रोमानी/सुहानी)

(25) ..... रोटियाँ सेकनें के लिए हैं? जलने के लिए नहीं है। (आग/आटा)

(26) कवि ऋतुराज के अनुसार "वस्त्र और आभूषण" स्त्री जीवन के ..... है। (बंधन/अलंकरण)

(27) विदा के समय माँ को अपनी बेटी ..... पूंजी प्रतीत हो रही थी। (अंतिम/संचित)

(28) ऋतुराज ने चालीस वर्षों तक ..... साहित्य का अध्यापन किया। (हिन्दी/अंग्रेजी)

(29) सोमदत्त, परिमल सम्मान ..... को मिला। (ऋतुराज/निराला)

(30) ऋतुराज की कविताएँ ..... हैं। (तुकान्त/छन्दमुक्त)

उत्तर– (1) सांख्य भाव (2) जन्मांध (3) बड़भागी (4) लकड़ी (5) राजनीति (6) पारसौली (7) कृष्ण (8) वात्सल्य रस (9) उद्धव (10) लक्ष्मण (11) क्रोधी (12) गाय (13) कायर (14) भगवान शिव (15) मित्रों (16) मुसक्या (17) बरसने (18) केशों (19) संस्कृनिष्ठ खड़ी बोली (20) मुक्तक (21) साहस होते हुए दुविधाग्रस्त रहना (22) कृष्णा (23) भविष्य (24) रोमानी (25) आग (26) बंधन (27) अंतिम (28) अंग्रेजी (29) ऋतुराज (30) छन्दमुक्त।

प्रश्न 3. सही जोड़ी बनाइये–

(1)

(अ)	(ब)
(1) सूर के पद	(a) निराला
(2) उत्साह	(b) सूरदास
(3) निराला	(c) अट नहीं रही है
(4) राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद	(d) जयशंकर प्रसाद
(5) 'छाया मत छूना'	(e) ऋतुराज
(6) 'आत्मकथ्य'	(f) तुलसीदास
(7) कन्यादान	(g) गिरिजाकुमार माथुर

उत्तर– (1) b (2) a (3) c (4) f (5) g (6) d (7) e.

(2) सही जोड़ी बनाइये–

(अ)	(ब)
(1) विनयपत्रिका	(a) गिरजाकुमार माथुर
(2) कामायनी	(b) तुलसीदास
(3) साहित्य लहरी	(c) जयशंकर प्रसाद
(4) शिलापंख चमकीले	(d) सूरदास
(5) पुल पर पानी	(e) ऋतुराज

उत्तर– (1) b (2) c (3) d (4) a (5) e.

(3) सही जोड़ी बनाइये–

(अ)	(ब)
(1) मधुकर	(a) परशुराम
(2) मदनमहीन	(b) उद्धव
(3) श्री ब्रजदूलह	(c) श्रीकृष्ण
(4) प्रातहि जगावत	(d) बसंत
(5) प्यारी राधिका को प्रतिबिंब सो लगत चंद।	(e) ऋतुराज

उत्तर– (1) (b) (2) (e) (3) (c) (4) (d) (5) (a).

(4)

(अ)	(ब)
(1) सूरदास का जन्म एवं मृत्यु	(a) सन् 1889, सन् 1937
(2) तुलसीदास का जन्म एवं मृत्यु	(b) सन् 1478,सन 1583
(3) जयशंकर प्रसाद का जन्म एवं मृत्यु	(c) सन् 1532, सन् 1623
(4) निराला का जन्म एवं मृत्यु	(d) सन् 1918,सन् 1994
(5) गिरिजाकुमार माथुर का जन्म एवं मृत्यु	(e) सन् 1940
(6) ऋतुराज का जन्म	(f) सन् 1899, सन् 1996

उत्तर– (1) b (2) c (3) a (4) f (5) d (6) e.

प्रश्न 4. एक शब्द/वाक्य में उत्तर दीजिए–

(1) सूरदास भक्ति काल की किस शाखा के कवि है?

(2) गोपियों के अनुसार राजा का धर्म क्या है?

(3) सूर-सारावली के कवि का क्या नाम है?

(4) क्षितिज भाग 2 में संग्रहित सूर्य के 4 पद कहाँ से लिए गए हैं?

(5) गोपियों ने भ्रमण के बहाने किस पर व्यंग्य बाण छोड़े हैं।

(6) राम लक्ष्मण परशुराम संवाद रामचरितमानस के किस कांड से लिया गया है?

(7) गोस्वामी तुलसीदास की मृत्यु कहाँ हुई?

(8) सीता स्वयंवर में राम-लक्ष्मण किसके साथ आए थे?

(9) 'बालकु बोलि बधी नहीं तोही' में कौन-सा अलंकार है?

(10) ऊँगली दिखाने से कौन मुरझा जाता है?

(11) कवि प्रसाद जी अपने किस स्वभाव को दोष नहीं देना चाहते?

(12) मुरझाकर गिर रही पत्तियाँ किसका प्रतीक है?

(13) 'आत्मकथ्य' कविता में किस पक्ष की अभिव्यक्ति हुई?

(14) प्रेयसी के कपोलों की लालिमा की तुलना किससे की गई है?

(15) प्रसाद जी के आलिंगन में आते-आते क्या भाग गया?

(16) बादल के हृदय में कौन छुपा है?

(17) विश्व के सकल जन कैसे हो रहे हैं?

(18) घेर-घेर घोर गगन में कौन-सा अलंकार है?

(19) बादल किस दिशा से आते हैं?

(20) तृप्त धरा का सांकेतिक अर्थ क्या है?

(21) 'यामिनी' का शाब्दिक अर्थ क्या है?

(22) गिरिजाकुमार माथुर के एक काव्य संग्रह का नाम लिखिए।

(23) गिरिजाकुमार माथुर किस मिजाज के कवि हैं?

(24) 'कन्यादान' पाठ में माँ बेटी को कौन-सा पाठ पढ़ाना चाहती थी।

(25) पाठिका किसे कहा गया है?

(26) माँ पुत्री को किस तरह रहने का कहती है?

(27) स्त्री के बंधन कौन-से हैं?

(28) कवि ऋतुराज ने धुंधले प्रकाश की पीतिका किसे कहा है?

उत्तर– (1) सूरदास भक्ति काल के कृष्ण भक्ति शाखा के प्रतिनिधि कवि हैं।

(2) प्रजा का हित ही राजा का धर्म है।

(3) सूर-सारावली के कवि का नाम महाकवि सूरदास है।

(4) ये पद सूरसागर के भ्रमरगीत से दिए गए है।
(5) गोपियों ने भ्रमर के बहाने उद्धव पर व्यंग्य बाण छोड़े हैं।
(6) यह अंश रामचरितमानस से बालकांड से लिया गया है।
(7) गोस्वामी तुलसीदास की मृत्यु काशी में हुई।
(8) सीता स्वयंवर में राम-लक्ष्मण गुरु विश्वामित्र के साथ आए थे।
(9) बालक बोलि बधी नहीं तोही में अनुप्रास अलंकार है।
(10) ऊँगली दिखान से कुम्हड़े का फूल मुरझा जाता है।
(11) कवि प्रसाद जी अपने सरल स्वभाव को दोष नहीं देना चाहते।
(12) मुरझाकर गिर रही पत्तियाँ निराशा का प्रतीक हैं।
(13) आत्मकथ्य कविता में जीवन के यथार्थ एवं अभाव पक्ष की अभिव्यक्ति हुई है।
(14) ऊषाकाल की अरूणिमा से तुलना की गई है।
(15) प्रसाद जी के आलिंगन में आते-आते जीवन का सुख भाग गया।
(16) बादल के हृदय में विद्युत (बिजली) छिपी है।
(17) विश्व के सकल जन गर्मी से व्याकुल हो रहे हैं।
(18) घेर-घेर घोर गगन में अनुप्रास अलंकार है।
(19) बादल अज्ञात दिशा से आते हैं।
(20) तप्त धरा का सांकेतिक अर्थ सांसारिक दुखों से पीड़ित पृथ्वी है।
(21) यामिनी का शाब्दिक अर्थ तारों भरी चाँदनी रात है।
(22) इनके काव्यसंग्रह हैं- नाश और निर्माण/धूप के धान/भीतरी नदी की यात्रा/शिलापंख चमकीले।
(23) गिरिजाकुमार माथुर रोमानी मिजाज के कवि माने जाते हैं।
(24) माँ बेटी को जीवन के यथार्थ का पाठ पढ़ाना चाहती थी।
(25) पाठिका लड़की को कहा गया है।
(26) माँ, पुत्री को सचेत और सजग रहने को कहती है।
(27) स्त्री के बंधन वस्त्र और आभूषण हैं।
(28) कवि ने बेटी को धुंधले प्रकाश की पीठिका कहा है।

प्रश्न 5. सत्य/असत्य बताइये-

(1) गोपियाँ कृष्ण द्वारा चुराए गए अपने मन को वापस माँग रही है।
(2) अच्छे लोग परहित के लिए दौड़े चले आते हैं।
(3) उद्धव का संदेश गोपियों को गुड़ की तरह मीठा लगा।
(4) योग संदेश सुनकर गोपियों की विरह अग्नि बढ़ रही है।
(5) राजा का धर्म है कि प्रजा को ना सताए।
(6) शिव धनुष राम ने तोड़ा।
(7) कुछ क्षत्रिय राजाओं को हराकर परशुराम राम लक्ष्मण को हराने के सपने देख रहे थे।
(8) वीर व्यक्ति अपनी प्रशंसा स्वयं करते हैं।
(9) शिव धनुष को खंडित देखकर परशुराम क्रोधित हो उठे।
(10) परशुराम के फरसे को देखकर लक्ष्मण भयभीत हो गए।
(11) जयशंकर प्रसाद का जन्म वाराणसी में हुआ।
(12) 'आत्मकथ्य' कविता पहली बार 1932 में हंस के आत्मकथा विशेषांक में प्रकाशित हुई थी।
(13) जयशंकर प्रसाद मौन रहकर औरों की कथा सुनने के इच्छुक थे।
(14) कवि जयशंकर प्रसाद अपने जीवन के निजी अनुभवों को सबसे बांटना चाहते हैं।
(15) कवि प्रसाद ने अपने मन को भँवरे का रूप दिया है।
(16) 'अट नहीं रही' कविता फागुन की मादकता को प्रकट करती है।
(17) छायावादी कवियों में निराला ने सबसे पहले मुक्तक छंद का प्रयोग किया।
(18) निराला पूँजीवाद के समर्थक तथा पोषक थे।
(19) निराला को आधुनिक कवि भी कहा जाता है।
(20) निराला प्रगतिवादी कवि हैं।
(21) गिरिजाकुमार माथुर प्रयोगवादी कवि थे।
(22) 'लीला मुखारविद' गिरिजाकुमार माथुर का काव्य संग्रह है।
(23) जो न मिला भूल उसे कर तू भविष्य वरण।
(24) गिरिजाकुमार माथुर का जन्म दिल्ली में हुआ था।
(25) गिरिजाकुमार माथुर की प्रारंभिक शिक्षा झाँसी (उत्तरप्रदेश) में हुई।
(26) 'छाया मत छूना' गिरिजाकुमार माथुर की कविता है।
(27) चाँदनी रात के बाद अंधेरी रात आती है।
(28) गिरिजाकुमार माथुर का निधन 1994 में हुआ।
(29) ऋतुराज जनवादी कवियों की श्रेणी में आते हैं।
(30) माँ ने अंतिम पूँजी बेटी को कहा है।
(31) माँ ने कहा- 'लड़की होना पर लड़की जैसे दिखाई मत देना।'

उत्तर- (1) सत्य (2) सत्य (3) असत्य (4) सत्य (5) सत्य (6) सत्य। (7) सत्य (8) असत्य (9) सत्य (10) असत्य (11) सत्य (12) सत्य (13) सत्य (14) असत्य (15) सत्य (16) सत्य (17) सत्य (18) असत्य (19) सत्य (20) सत्य (21) सत्य (22) असत्य (23) सत्य (24) असत्य। (25) सत्य (26) सत्य (27) सत्य (27) सत्य (28) सत्य (29) सत्य। (30) सत्य (31) सत्य

प्रश्न 6 निम्नलिखित प्रश्नों के 30-30 शब्दों में उत्तर लिखिए।

प्रश्न 1. पद्य साहित्य से आप क्या समझते हैं?

उत्तर- काव्य, कविता या पद्य, साहित्य की वह विधा है जिसमें किसी कहानी या मनोभाव को कलात्मक रूप से किसी भाषा के द्वारा अभिव्यक्त किया जाता है, भारत में कविता का इतिहास और कविता का दर्शन बहुत पुराना है, इसका प्रारंभ भरत मुनि से समझा जाता है। कविता का शाब्दिक अर्थ है काव्यात्मक रचना या कवि की कृति, जो छन्दों की शृंखलाओं में विधिवत बांधी जाती है।

प्रश्न 2. भक्तिकाल की दो विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर- (1) समन्वय की भावना (2) भारतीय संस्कृति की रक्षा।

प्रश्न 3. छायावाद की दो विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर- छायावाद की दो विशेषताएँ निम्न हैं-
(अ) आत्माभिव्यक्ति
(ब) नारी सौंदर्य और प्रेम-चित्रण।

प्रश्न 4. भक्तिकाल के दो कवियों के नाम एवं प्रत्येक की एक-एक रचना का नाम लिखिए।

उत्तर-

कवि		रचनाएँ
(1) कबीरदास	-	(1) बीजक (रमैनी, सबद)
(2) नानक देव	-	(2) ग्रंथ साहिब में संकलित (संकलन-गुरू अर्जुन देव)

प्रश्न 5. छायावाद के दो कवियों के नाम एवं प्रत्येक की एक-एक रचना का नाम लिखिए।

उत्तर-

कवि		रचनाएँ
(1) जयशंकर प्रसाद	-	(1) द्वारना
(2) सुमित्रानन्दन पंत	-	(2) उच्छवास

प्रश्न 6. गोपियों द्वारा उद्धव को भाग्यवान कहने में क्या व्यंग्य निहित है?

उत्तर- (1) गोपियों द्वारा उद्धव को भाग्यवान कहने में यह व्यंग निहित है कि उद्धव वास्तव में भाग्यवान न होकर अति भाग्यहीन है। (2) वे कृष्णरूपी अद्वितीय सौंदर्य और प्रेम-रस के सागर के सान्निध्य में रहते हुए भी उस असीम आनंद से वंचित हैं। (3) वे प्रेम-बंधन में बँधने एवं मन के प्रेम में अनुरक्त होने की सुखद अनुभूति से पूर्णतया अपरिचित है।

प्रश्न 7. सूरदास की काव्यगत विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर- प्रेम की एकनिष्ठता व दृढ़ता- कवि ने यह दर्शाया कि गोपियों ने कृष्ण को हारिल पक्षी द्वारा पकड़ी गई लकड़ा की भाँति अपने हृदय में दृढ़तापूर्वक बसा लिया है। वे मन, कर्म और वचन से कृष्ण के प्रति समर्पित हैं।
यहाँ कवि ने यह संदेश दिया है कि अनन्य भक्ति में साधक अपने आराध्य के प्रति एकनिष्ठ होकर पूर्णतया समर्पित रहता है।
निरंतर नाम-स्मरण- गोपियाँ निरंतर कृष्ण के नाम की रट लगाती रहती है भक्त सोते, जागते, स्वप्नावस्था में दिन-रात अपने आराध्य के नाम का स्तरण करता रहता है।
मन की एकाग्रता- कवि ने गोपियों के माध्यम से यह संदेश दिया है कि आराध्य के प्रेम-रस में निरंतर डूबे रहने के कारण भक्त का मन सदैव एकाग्र बना रहता है योग की साधना करने की आवश्यकता तो उन्हें पड़ती है जिनका मन चंचल बना रहता है।
तीव्र सहानुभूति- गोपियाँ कृष्ण के मथुरा चले जाने पर उनके वियोग में तीव्र पीड़ा का अनुभव करती है। सूरदास ने भक्ति के लिए आराध्य के प्रति व्याकुलता को एक अनिवार्य तत्व के रूप में चित्रित किया है।

प्रश्न 8. सूरदास का भावपक्ष लिखते हुए 2 रचनाओं के नाम लिखिए।

उत्तर- सूरदास की भक्ति सख्यभाव की है। आपने कृष्ण के लोकरंजक रूप का मनभावन चित्रण किया है। बाल चरित्र-चित्रण में सूर बेजोड़ है। इस प्रकार वात्सल्य रस से ओतप्रोत सूर के पद किसी भी साहित्य प्रेमी को अपनी ओर आकर्षित किए बिना नहीं रह सकते।
दो रचनाएँ- (1) सूरसागर (2) सूर सारावली।

प्रश्न 9. महाकवि सूरदास का साहित्य में स्थान निर्धारित कीजिए।

उत्तर- सूरदास हिन्दी साहित्य के महाकवि हैं, क्योंकि उन्होंने न केवल उतार-चढ़ाव और भाषा की दृष्टि से साहित्य को पल्लवित किया वरन् कृष्ण काव्य की विशिष्ट परम्परा को भी

जन्म दिया। सूर का कृष्णकाव्य व्यंग्यात्मक भी है। इसमें उपालम्भ की प्रधानता है, सूर का भ्रमर गीत इसका ज्वलंत उदाहरण है।

प्रश्न 10. गोस्वामी तुलसीदास की दो रचनाओं के नाम एवं काव्यगत विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर- दो रचनाएँ- तुलसीदास का सर्वश्रेष्ठ ग्रंथ है- 'रामचरितमानस' अन्य प्रमुख ग्रंथ हैं- विनय पत्रिका, गीतावली और कवितावली।

काव्यगत विशेषताएँ- तुलसीदास ने अवधी एवं ब्रज दोनों ही भाषाओं में काव्य रचना की है, उनके काव्य में चौपाई, दोहा, सोरठा, हरिगीतिका, कवित्त पद आदि अनेक छंदों का प्रयोग हुआ है।

प्रश्न 11. गोस्वामी तुलसीदास के काव्य का भावपक्ष एवं हिन्दी साहित्य में उनका स्थान लिखिए।

उत्तर- काव्य का भावपक्ष- तुलसीदास रामभक्ति शाखा के प्रतिनिधि कवि हैं। उनका भाव क्षेत्र अत्यंत व्यापक है। उनके काव्य का सर्वाधिक प्रभावशाली पक्ष है, लोकमंगल की साधना। उनके काव्य में धार्मिक, सांस्कृतिक और सामाजिक दृष्टि की व्यापकता है। उन्होंने सगुण-निर्गुण, ज्ञान-भक्ति, शैव-वैष्णव आदि में समन्वय स्थापित करने का सराहनीय प्रयास किया। उनके काव्य में हृदय की विशालता, भावाभिव्यक्ति की शक्ति एवं लोकजीवन का सहज चित्रण है। यही कारण है कि तुलसी का भाव-पक्ष अत्यंत प्रबल है।

हिन्दी साहित्य में स्थान- समग्रत: तुलसीदास मानव-स्वभाव और जीवन जगत-की गहरी अंतर्दृष्टि रखने वाले भक्त कवि, आदर्श समाज सुधारक, दार्शनिक एवं युग-प्रवर्तक थे।

प्रश्न 12. जयशंकर प्रसाद की काव्यगत विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर- काव्यगत विशेषताएँ- छायावादी काव्य-धारा के कवियों में जयशंकर प्रसाद का नाम शीर्षस्थ है। प्रसाद जी का भाव संसार अत्यंत व्यापक है। उनके काव्य में प्रकृति प्रेम, नारी-सौंदर्य का सूक्ष्म चित्रण, काल्पनिकता, दुख और वेदना की गहराई, वैयक्तिक प्रेमानुभूति, देशप्रेम, प्राचीन भारतीय संस्कृति एवं दर्शन की व्यापकता आदि का भावपूर्ण चित्रण हुआ है। उनकी रचनाओं में रहस्यात्मकता का गुण भी दर्शनीय है।

प्रश्न 13. जयशंकर प्रसाद के काव्य का भावपक्ष स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- कलापक्ष-भाषाशैली- प्रसाद जी के काव्य में खड़ी बोली हिन्दी की परिष्कृत रूप दृष्टिगत होता है। इनकी प्रारंभिक रचनाओं की भाषा सहज एवं कोमलकांत पदावली से युक्त है। परवर्ती काव्य की भाषा में तत्सम शब्दों की प्रधानता है। प्रसाद जी के काव्य में लक्षणा एवं व्यंजना शब्द-शक्ति का पर्याप्त प्रयोग हुआ है।

अलंकार योजना- प्रसाद जी की कविताओं में अलंकारों का आकर्षक प्रयोग हुआ है। उनके काव्य में रूपक व मानवीकरण अलंकार सुंदर रूप में प्रयुक्त हुए हैं। अनुप्रास, उपमा, पुनरुक्ति प्रकाश आदि अलंकार भी अपने उत्कृष्ट रूप में दिखाई देते हैं।

अनुप्रास- 'कौन कहानी', 'हँसते होने', 'पथिक की पंथा की' आदि।

समग्रत: जयशंकर प्रसाद छायावादी काव्यधारा के सिरमौर कवि हैं, जिन्होंने सौंदर्य, प्रेम, वेदना एवं मानवतावादी दृष्टिकोण का भावपूर्ण चित्रण किया है।

प्रश्न 14. आधुनिक हिन्दी साहित्य में जयशंकर प्रसार का क्या स्थान है?

उत्तर- आधुनिक हिन्दी साहित्य के इतिहास में इनके कृतित्व का गौरव अक्षुण्ण है। वे एक युगप्रवर्तक लेखक थे जिन्होंने एक ही साथ कविता, नाटक, कहानी और उपन्यास के क्षेत्र में हिन्दी को गौरवान्वित होने योग्य कृतियाँ दीं।

प्रश्न 15. निराला के काव्य का भावपक्ष एवं कलापक्ष लिखिए।

उत्तर- भावपक्ष- निराला जी छायावादी काव्य धारा के प्रमुख स्तम्भ माने जाते हैं। उनके काव्य में छायावाद की समस्त काव्य विशेषताएँ विद्यमान हैं। उनका क्रान्तिकारी, प्रगतिशील, विद्रोही और बेबाक व्यक्तित्व एवं शोषक वर्ग के प्रति उनका आक्रोशपूर्ण रूप से ही उन्हें निराला बनाता है। उनके काव्य में उपेक्षित, वंचित और पीड़ित शोषितों के प्रति संवेदना का स्वर उभरा है। इस कारण उनकी गणना छायावादी के साथ ही प्रगतिवादी कवियों में भी की जाती है। उनका साहित्य में दलित समाज के प्रति भी गहरी सहानुभूति का भाव है। उन्होंने श्रृंगार, प्रेम, प्रकृति सौंदर्य और राष्ट्र प्रेम आदि विषयों पर भी काव्य रचना की है।

कला पक्ष- काव्य की पुरानी परम्पराओं को त्याग कर काव्य शिल्प के स्तर पर भी विद्रोही तेवर अपनाते हुए निराला जी ने काव्य शैली को नई दिशा प्रदान की। उनके काव्य में भाषा का कसाव, शब्दों की मितव्ययिता एवं अर्थ की प्रधानता है। संस्कृतिनिष्ठ तत्सम शब्दों के साथ ही संधि-समासयुक्त शब्दों का भी प्रयोग निराला जी ने किया है।

प्रश्न 16. निराला की दो रचनाएँ एवं हिन्दी साहित्य में उनका स्थान स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- प्रमुख रचनाएँ- काव्य- 'परिमल', 'अनामिका', 'गीतिका' 'अपरा' आदि।

हिन्दी साहित्य में स्थान- इन्होंने इलाहाबाद में रहकर स्वतंत्र लेखन और अनुवाद कार्य किया। ये हिन्दी साहित्य में छायावाद के प्रमुख स्तंभ माने जाते हैं। 'निराला' ने कहानियाँ, उपन्यास और निबंध भी लिखे हैं। किन्तु उनकी ख्याति विशेष रूप से कविता के कारण ही हैं।

प्रश्न 17. उद्धव के व्यवहार की तुलना किस-किस से की गई है?

उत्तर- ऊद्धव के व्यवहार की तुलना कमल के पत्ते और तेल की मटकी से करते हुए गोपियाँ कहती हैं कि जिस प्रकार कमल का पता जल में ही रहता है, फिर भी उस पर पानी का धब्बा तक नहीं लग पाता, इसी प्रकार तेल की मटकी को पानी में रखने पर उस पर जल की एक बूँद तक नहीं ठहर पाती, ठीक वैसे ही उद्धव कृष्ण के समीप रहते हुए भी उनके रूप के आकर्षण तथा प्रेम-बंधन से सर्वथा मुक्त है।

प्रश्न 18. गोपियों ने किन-किन उदाहरणों के माध्यम से उद्धव को उलाहने दिए हैं?

उत्तर- (1) गोपियों ने कमल के पत्ते, तेल की मटकी और प्रेम की नदी के उदाहरणों के माध्यम से उद्धव को उलाहने दिए हैं। (2) उनका कहना है कि कृष्ण के साथ रहते हुए भी प्रेमरूपी नदी में उतरे ही नहीं, अर्थात् साक्षात् प्रेमस्वरूप श्रीकृष्ण के पास रहकर भी वे उनके प्रेम से वंचित हैं, यह उनका दुर्भाग्य ही है।

प्रश्न 19. उद्धव द्वारा दिए गए योग के संदेश ने गोपियों की विरहाग्नि में घी का काम कैसे किया?

उत्तर- गोपियाँ कृष्ण के आगमन की आशा में दिन गिनती जा रही थीं। वे अपने तन-मन की व्यथा को चुपचाप सहती हुई कृष्ण के प्रेम-रस में डूबी हुई थीं। कृष्ण को आना था परंतु उन्होंने योग का संदेश देने के लिए उद्धव को भेज दिया। विरह की अग्नि में जलती हुई गोपियों को जब उद्धव ने कृष्ण को भूल जाने और योग-साधना करने का उपदेश देना प्रारम्भ किया, तब गोपियों की विरह-वेदना और भी बढ़ गई। इस प्रकार उद्धव द्वारा दिए गए योग के संदेश ने गोपियों की विरह अग्नि में घी का काम किया।

प्रश्न 20. 'मरजादा न लही' के माध्यम से कौन-सी मर्यादा न रहने की बात की जा रही है?

उत्तर- (1) 'मरजादा न लही' के माध्यम से प्रेम की मर्यादा न रहने की बात कही जा रही है। (2) कृष्ण के मथुरा चले जाने पर गोपियाँ उनके वियोग में जल रही थीं। कृष्ण के आने पर ही उनकी विरह वेदना मिट सकती थीं, परंतु कृष्ण ने स्वयं न आकर उद्धव को यह संदेश देकर भेज दिया कि गोपियाँ कृष्ण का प्रेम भूलकर योग-साधना में लग जाएँ। (3) प्रेम के बदले प्रेम का प्रतिदान ही प्रेम की मर्यादा है, लेकिन कृष्ण ने गोपियों के प्रेम रस के उत्तर में योग की शुष्क धारा भेज दी। इस प्रकार कृष्ण ने प्रेम की मर्यादा नहीं रखी। (4) वापस लौटने का वचन देकर भी वे गोपियों से मिलने नहीं गए।

प्रश्न 21. कृष्ण के प्रति अपने अनन्य प्रेम को गोपियों ने किस प्रकार अभिव्यक्त किया है?

उत्तर- गोपियों ने कृष्ण के प्रति अपने अनन्य प्रेम को हारिल पक्षी के उदाहरण के माध्यम से अभिव्यक्त किया है। जिस प्रकार हारिल पक्षी सदैव अपने पंजे में कोई लकड़ी अथवा तिनका पकड़े रहता है, उसे किसी भी दशा में नहीं छोड़ता। उसी प्रकार गोपियों ने भी मन, कर्म और वचन से कृष्ण को अपने हृदय में दृढ़तापूर्वक बसा लिया है।

वे जागते, सोते, स्वप्नावस्था में, दिन-रात कृष्ण-कृष्ण की ही रट लगाती रहती है। इस प्रकार वे अनन्य भाव से कृष्ण के प्रेम में निमग्न हैं।

प्रश्न 22. गोपियों के अनुसार राजा का धर्म क्या होना चाहिए?

उत्तर- गोपियों के अनुसार राजा का धर्म यह होना चाहिए कि वह प्रजा को कभी भी सताए नहीं और निरंतर उनकी भलाई में लगा रहे। साथ ही वह अपनी प्रजा को अन्याय से छुटकारा दिलाए।

प्रश्न 23. परशुराम के क्रोध करने पर लक्ष्मण ने धनुष के टूट जाने के लिए कौन-कौन से तर्क दिए?

उत्तर- परशुराम के क्रोध करने पर लक्ष्मण ने धनुष के टूट जाने के लिए निम्नलिखित तर्क दिए-

(1) लक्ष्मण ने कहा कि बचपन में हमने बहुत से धनुष तोड़ दिए थे, परंतु आपने कभी ऐसा क्रोध नहीं किया। इसी धनुष पर इतनी ममता क्यों है?

(2) सभी धनुष तो एक जैसे ही होते हैं।

(3) राम ने तो इसे नए के भ्रम में देखा था।

(4) यह धनुष तो राम के छूते ही टूट गया, इसमें उनका क्या दोष? आप तो बिना कारण ही क्रोध कर रहे हैं।

प्रश्न 24. लक्ष्मण ने वीर योद्धा की क्या-क्या विशेषताएँ बताईये।

उत्तर- लक्ष्मण ने वीर योद्धा की निम्नलिखित विशेषताएँ बताईं- (1) वीर योद्धा धैर्यवान होते हैं। (2) वे क्षोभ से रहित होते हैं। (3) वीर पुरुष किसी को अपशब्द नहीं कहते। (4) शूरवीर युद्ध के मैदान में वीरतापूर्ण कार्य करके दिखाते हैं। (5) वे अपनी वीरता के बारे में अपने मुँह से नहीं बताते। (6) वे युद्ध में शत्रु को उपस्थित पाकर अपने प्रताप की डींग नहीं मारा करते हैं।

प्रश्न 25. अवधी भाषा आज किन-किन क्षेत्रों में बोली जाती है?

उत्तर- अवधी भाषा आज कानपुर से पुरब चलते ही उन्नाव के कुछ भागों लखनऊ, फैजाबाद, बाराबंकी, प्रतापगढ़, सुलतानपुर, जौनपुर, मिर्जापुर, वाराणसी, इलाहाबाद तथा आसपास के क्षेत्रों में बोली जाती है।

प्रश्न 26. कवि जयशंकर प्रसाद आत्मकथा लिखने से क्यों बचना चाहते थे?

उत्तर- (1) कवि जयशंकरप्रसाद आत्मकथा लिखने से इसलिए बचना चाहता है, क्योंकि उसके जीवन में बहुत सारी पीड़ादायक घटनाएँ हुई हैं।

(2) अपनी सरलता के कारण उसने कई बार धोखा भी खाया है।

(3) कवि के पास मात्र कुछ सुनहरे क्षणों की स्मृतियाँ ही शेष हैं। जिनके सहारे वह अपनी जीवन-यात्रा पूरी कर रहा है। उन यादों को उसने अपने अंतर्मन में सँजोकर रखा है और उन्हें प्रकट करना नहीं चाहता।

(4) कवि को लगता है कि उसकी आत्मकथा में ऐसा कुछ भी नहीं है जिसे महान और रोचक मानकर लोग आनंदित होंगे।

(5) इन्हीं कारणों से कवि आत्मकथा लिखने से बचना चाहता है।

प्रश्न 27. आत्मकथा सुनाने के संदर्भ में 'अभी समय भी नहीं' कवि ऐसा क्यों कहता है?

उत्तर- (1) आत्मकथा सुनाने के संदर्भ में 'अभी समय भी नहीं' कहने से कवि का तात्पर्य यह है कि अभी उसके लिए आत्मकथा का उचित समय नहीं है।

(2) कवि द्वारा ऐसा कहने का कारण यह है कि कवि को अभी दुखों के सिवाय और कोई उपलब्धि नहीं मिल सकी है।

(3) कवि के जीवन का अभी छोटा-सा भाग ही व्यतीत हुआ है।

(4) कवि को अपने जीवन में जो गहरी पीड़ा मिली है, उसे उसने चुपचाप अकेले ही सहा है। उसकी व्यथा अभी थककर सोई हुई है, अर्थात् बहुत समय तक सहते रहने के बाद उसे अपनी पुरानी वेदना से मुक्ति मिल सकी है।

(5) इस प्रकार कवि बहुत कठिनाई से उस पीड़ा को भूल पाया है।उसे आत्मकथा लिखते समय पुन: उस पीड़ा को झेलना होगा जो उसके लिए कष्टदायक है।

प्रश्न 28. स्मृति को 'पाथेय' बनाने से कवि प्रसाद जी का क्या आशय है?

उत्तर- कवि के जीवन का अधिकांश भाग व्यथा से भरा हुआ रहा है। उसके जीवन में कुछ ही आनंद के क्षण आए हैं, जो चाँदनी रातों में प्रेयसी से मिलने की भाँति सुखद है। कवि अपने जीवन की दुख भरी यात्रा करते-करते थक चुका है। अपने जीवन की राह में आगे बढ़ते हुए कतिपय पुराने सुखद क्षणों को याद करके ही वह अपना सफर तय कर रहा है। इस प्रकार उसकी मधुर स्मृति ही उसकी यात्रा का संबल बनी हुई है। स्मृति के 'पाथेय' बनने से कवि का यही आशय है।

प्रश्न 29. 'निराला' बादल से फुहार, रिमझिम या बरसने के स्थान पर 'गरजने' के लिए कहते हैं, क्यों?

उत्तर- कवि बादल से फुहार,रिमझिम या बरसने के लिए नहीं कहता है, क्योंकि ऐसा कहने से यह प्रतीत होता है कि वह बादल से कोमल स्वर में प्रार्थना कर उसके शांत व मनोहर स्वरूप का चित्रण कर रहा है।

इस कविता में कवि बादल से 'गरजने' के लिए कहता है। इसका कारण यह है कि वह बादल के माध्यम से नूतन कविता की रचना करने वाले कवियों से यह आह्वान करना चाहता है कि वे बादलों की गरज के समान विप्लवकारी स्वर में क्रांति चेतना से भरे हुए काव्य का सृजन करें।

प्रश्न 30. कविता का शीर्षक 'उत्साह' क्यों रखा गया है?

उत्तर- (1) इस कविता में कवि ने बादल से 'गरजने' का आह्वान किया है, जो बादलों के मोहक स्वरूप के स्थान पर उनके उत्साह को प्रदर्शित करता है। (2) यहाँ नूतन कविता का सृजन करने वाले कवियों से अपने हृदय में बिजली की छवि बनाए रखने की बात कही गई है। इस प्रकार उनसे क्रांति-चेतना के विचार का अभिव्यक्त करने का आह्वान किया गया है। इससे उनमें उत्साह का संचार होता है। (3) अपनी कविताओं में भी विद्युत छिपाने के लिए कहकर कवि ने उन्हें उत्साहपूर्ण कविताएँ लिखने के लिए प्रेरित किया है। (4) बादलों से यह आह्वान किया गया है कि बरसकर विश्व के व्याकुल लोगों की व्याकुलता दूर कर धरती को शीतलता प्रदान करें। (5) इस प्रकार बादलों की लोक-कल्याण के कार्य करने के लिए उत्साहित किया गया है।

प्रश्न 31. 'उत्साह' कविता में बादल किन-किन अर्थों की ओर संकेत करता है?

उत्तर- कविता 'उत्साह' में बादल अनेक अर्थों की ओर संकेत करता है- (1) बादल घनघोर रूप धारण कर पूरे आकाश को आच्छादित कर लेने वाला दिखाया गया है। यहाँ वह असीम बलशाली होने के अर्थ की ओर संकेत करता है। (2) बादल को गरजते हुए चित्रित कर कवि ने उसे 'उत्साह' के अर्थ में लिया है। (3) इस कविता में बादल नूतन कविता करने वाले रचनाकारों के लिए विप्लव, विध्वंस और क्रांति चेतना के अर्थ की ओर संकेत करता है। (4) बादल पीड़ित प्यासे जनों की आकांक्षा को पूरा करने वाले परोपकारी के अर्थ की ओर भी संकेत करता है। (5) कविता में बादल अनंत सत्ता के वाहक के रूप में भी संकेतिक है।

प्रश्न 32. कवि की आँख फागुन की सुंदरता से क्यों नहीं हट रही है?

उत्तर- (1) फागुन में प्रकृति की सुंदरता में ऐसा निखार आ गया है कि उसकी आभा रामा नहीं पा रही है।

(2) फागुन की हवा का स्पर्श पाते ही धरती का कोना-कोना उल्लास से भर उठा है।

(3) जिस वस्तु पर भी कवि की दृष्टि जाती है, उसका अनुपम सौंदर्य उसे कल्पना की दुनिया में उड़ा ले जाता है।

(4) फागुन की सुंदरता सर्वव्यापक हो गई है।

(5) उसके सौंदर्य की मादकता ने जैसे जादू करके कवि की दृष्टि को ऐसे बाँध दिया है कि उसकी आँखें हट नहीं पा रही है।

प्रश्न 33. फागुन में ऐसा क्या होता है जो बाकी ऋतुओं से भिन्न होता है?

उत्तर- फागुन में प्रकृति में कुछ इस तरह का निखार आ जाता है जो अन्य ऋतुओं में संभव नहीं होता। इस प्रकार की भिन्नता निम्नलिखित है-

1. पक्षियों का उल्लास- फागुन आते ही कोयल कूकने लगती है, पक्षी चहचहाने लगते हैं। उल्लास में भरकर वे आकाश में उड़ान भरते हैं तो लगता है कि संपूर्ण प्रकृति ही उल्लसित हो उठी है। मानव मन भी कल्पना-लोक में विचरण करने लगता है।

2. पौधों का सौंदर्य- पतझड़ के बाद ही फागुन का महीना आता है। इस समय पेड़-पौधों पर नए पल्लव आ जाते हैं। कहीं लालिमा तो कहीं हरीतिमा का साम्राज्य हो जाता है। चारों तरफ फूल ही फूल दिखाई देने लगते हैं। रंग-बिरंगे फूलों का यह सौंदर्य अन्य ऋतुओं में देखने को नहीं मिलता।

3. सुगंधित पवन- फागुन की हवा धरती के कण-कण में नई स्फूर्ति एवं नए उत्साह का संचार कर देती है। सुगंधित पवन के रोम-रोम पुलकित हो उठता है। हवा की ऐसी ताजगी अन्य वस्तुओं में नहीं मिलती।

4. मादक वातावरण- फागुन में सारा वातावरण मादकता से परिपूर्ण हो जाता है। हवा में फूलों की भीनी-भीनी सुगंध और प्रकृति में सर्वत्र दृष्टिगत होती सुंदरता से सबका मन मस्त हो जाता है। दूसरी ऋतुओं में इस तरह का मादक वातावरण नहीं होता।

5. सुहावना मौसम- फागुन के महीने में मौसम बड़ा ही सुहावना होता है न अधिक गर्मी होती है और न अधिक सर्दी। आकाश बिल्कुल स्वच्छ होता है। इस तरह का आनंददायक मौसम अन्य ऋतुओं में संभव नहीं है।

प्रश्न 34. गिरिजाकुमार माथुर ने कठिन यथार्थ के पूजन की बात क्यों कही है?

उत्तर- कवि कहता है कि, जो कटु यथार्थ है, उसे तुम स्वीकार करो। कवि ने ऐसा इसलिए कहा है, क्योंकि यदि हम विगत सुखों को याद करते हुए कल्पना की दुनिया में ही खोए रहें और वर्तमान से पलायन कर जाएँ तो इससे किसी भी समस्या का समाधान नहीं होगा। इसके स्थान पर हम कठिन यथार्थ का सामना करके ही वर्तमान दुखों से छुटकारा पाने का प्रयास कर सकते हैं। इस प्रकार वर्तमान का सामना करके ही भविष्य को सँवारा जा सकता है।

प्रश्न 35. 'छाया' शब्द किस संदर्भ में प्रयुक्त हुआ है? कवि ने उसे छूने के लिए मना क्यों किया है?

उत्तर- 'छाया' शब्द वहाँ बीती हुई सुखद यादों के संदर्भ में प्रयुक्त हुआ है। कवि ने उसे छूने के लिए इसलिए मना किया है क्योंकि विगत सुख को याद करने से कुछ भी हासिल होने वाला नहीं है। इससे तो वर्तमान का दुख और भी गहरा हो जाएगा।

प्रश्न 36. 'मृगतृष्णा' किसे कहते हैं, छाया मत छूना' कविता में इसका प्रयोग किस अर्थ में हुआ है?

उत्तर- (1) रेगिस्तान में भीषण गर्मी के समय जब रेत तपने लगती है,तब दूर स्थित रेत के ऊपर पानी की लहरों का आभास होने लगता है।

गर्मी के कारण प्यासा व्याकुल हिरन समझता है कि दूर आगे पानी से लबालब नदी बह रही है। वह अत्यंत तीव्र गति से उस ओर दौड़ने लगता है।

वह जितना आगे जाता है, पानी की लहरें उतनी ही आगे बहती दिखाई देती है। वह पानी की तलाश में दूर तक चलता चला जाता है, परंतु न तो कभी उसे पानी मिलता है और न ही उसकी प्यास बुझ पाती है। इसे ही मृगतृष्णा कहते हैं।

(2) कविता में मृगतृष्णा का प्रयोग 'छलावा' के अर्थ में हुआ है।

प्रश्न 37. 'छाया मत छूना' कविता में व्यक्त दुख के कारणों को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- 'छाया मत छूना' कविता में दुख के अनेक कारण बताए गए हैं-

विगत सुख की स्मृति- बीते हुए पुराने सुखद समय की यादों को इस कविता में दुख का एक प्रमुख कारण बताया गया है। विगत सुखों को याद करने से वर्तमान दुख और भी गहरा हो जाता है।

धन व सम्मान की चाह- मनुष्य धन-दौलत एवं सम्मान प्राप्त करने के उद्देश्य से निरंतर भाग-दौड़ में लगा रहता है। परंतु वह जितना ही दौड़ता है, उतना ही और भी भ्रम में पड़ जाता है। इस प्रकार उसे दुख ही प्राप्त होता है।

प्रभुता की मृगतृष्णा- प्रभुत्व प्राप्त करने की आकांक्षा में मनुष्य आगे बढ़ता चला जाता है, परंतु यह उसके लिए एक छलावा ही सिद्ध होता है। मृगतृष्णा के समान उसकी प्रभुतासंपन्न होने की चाह कभी भी पूरी नहीं होती और इसका परिणाम दुखदायी ही होता है।

सुख की क्षणभंगुरता- कविता में सुख को एक ऐसी चाँदनी रात के रूप में दिखाया गया है जिसमें काली अंधेरी रात छिपी हुई है। यहाँ यह दर्शाया गया है कि सुख स्थायी नहीं होता। सुख के बाद दुख अवश्य ही आता है।

दुविधा की स्थिति- दुविधा भी मनुष्य के लिए दुख का कारण बनती है। असमंजस की स्थिति में साहस रहते हुए भी मनुष्य कुछ नहीं कर पाता। वह निराशा व दुख में डूब जाता है।

समय पर उपलब्धि न मिलना- कविता में समय पर उपलब्धि के प्राप्त न होने को भी दुख का एक कारण बताया गया है।

प्रश्न 38. आपके विचार से माँ ने ऐसा क्यों कहा कि लड़की होना पर लड़की जैसी मत दिखाई देना।

उत्तर- माँ ने लड़की से कहा कि लड़की होना पर लड़कों जैसी मत दिखाई देना-

(1) माँ द्वारा ऐसा कहने का कारण यह था कि एक स्त्री होने के नाते वह स्वयं भी उन समस्याओं का सामना कर चुकी थी जो हमारे समाज में नारी को झेलनी पड़ती है। वह नहीं चाहती थी कि उसकी बेटी भी वैसी ही दुर्बलता का शिकार बने।

(2) माँ लड़की को बताना चाहती थी कि स्त्री पर अनेक प्रकार के बंधन लगा दिए जाते हैं। इस कारण स्त्री में दुर्बलता आ जाती है। वह भेदभाव सहते हुए परतंत्रता का जीवन जीने को विवश हो जाती है।

(3) लड़की की माँ उसे यही समझाती है कि वह भावी जीवन में नारी-सुलभ दुर्बलता न आने दे एवं अनुचित सामाजिक बंधनों का प्रतिकार करें।

प्रश्न 39. 'आग से रोटियाँ' सेंकने के लिए माँ ने बेटी को सचेत करना क्यों जरूरी समझा?

उत्तर- माँ ने बेटी को सचेत करना इसलिए जरूरी समझा क्योंकि उसकी बेटी इन सब बातों से अनजान थी। वह अत्यंत भोली एवं सरल थी। उसने घर में केवल सुख ही देखा था। वह जीवन के दुखों से अपरिचित थी। माँ को यह डर था कि उसकी भोली-भाली बेटी समाज-व्यवस्था के अनुरूप आदर्श रूपी बंधन को स्वीकार कर सामाजिक भेद-भाव का शिकार हो जाएगी। वह समाज के प्रतिमान के अनुरूप स्वयं को अबला मान लेगी। माँ नहीं चाहती कि उसकी बेटी को यह पीड़ा भोगनी पड़े। इसी कारण वह अनुचित बंधनों का प्रतिकार करने के लिए उसे सचेत करती है।

प्रश्न 40. माँ ने अपनी बेटी 'अंतिम पूँजी' क्यों लग रही थी?

उत्तर- माँ को अपनी बेटी 'अंतिम पूँजी' इसलिए लग रही थी क्योंकि वह उसके सबसे निकट थी। वह माँ के सुख-दुख की साथी थी। उसके जाने के बाद माँ का आँचल एकदम खाली हो जाने वाला था।

प्रश्न 41. माँ ने बेटी को क्या-क्या सीख दी?

उत्तर- माँ ने बेटी को निम्न सीख दी है- (1) माँ ने अपनी बेटी को यह सीख दी कि तुम अपनी सुंदरता व कोमलता के एहसास से गौरवान्वित मत होना। स्त्री की कोमलता को उसकी कमजोरी समझकर उसका उपहास किया जाता है। (2) माँ कहती है स्त्री-सुलभ सौंदर्य व कोमलता होने के बावजूद तुम अपनी दुर्बलता प्रकट मत करना। (3) तुम सामाजिक-व्यवस्था के अनुचित बंधनों को स्वीकार मत करना। (4) तुम आदर्शीकरण का प्रतिकार करना।

भावार्थ

प्रश्न 7. निम्नलिखित पद्यांशों का संदर्भ-प्रसंग सहित भावार्थ लिखिए। (4 अंकीय प्रश्न)

(1) ऊधो, तुम हौ अति बड़भागी।
अपरस रहत सनेह तगा तै, नाहिन मन अनुरागी।
पुरइनि पात रहत जल भीतर, ता रस देह न दागी।
ज्यौं जल माँह तेल की गागरि, बूँद न ताकौ लागी।
प्रीति-नदी मैं पाँऊ न बोरयौ, दृष्टि न रूप परागी।
सूरदास अबला हम भोरी, गुर चाँटी ज्यौं पागी।।

उत्तर- भावार्थ- गोपियाँ उद्धव से कहती हैं कि हे उद्धव, तुम सचमुच बहुत भाग्यशाली हो क्योंकि तुम प्रेम-बंधन से बिल्कुल अछूते अर्थात् स्वतंत्र हो और न ही तुम्हारा मन किसी के प्रेम में अनुरक्त हुआ है। जिस प्रकार कमल के पत्ते सदा जल के अन्दर रहते हैं परंतु वे जल से अछूते ही रहते हैं, उन पर जल की एक बूँद का भी धब्बा नहीं लगता और जिस प्रकार तेल की मटकी को जल में रखने पर जल की एक बूँद भी उस पर नहीं ठहरती, उसी प्रकार तुम कृष्ण के समीप रहते हुए भी उनके प्रेम बंधन से सर्वथा मुक्त हो। तुमने प्रेम रूपी नदी में कभी पाँव ही नहीं डुबोया अर्थात् तुमने कभी किसी से प्रेम ही नहीं किया और न ही कभी किसी के रूप-लावण्य ने तुम्हे आकर्षित किया है। गोपियाँ उद्धव से कहती है कि हम तो भोली-भाली अबलाएँ हैं और हम कृष्ण के प्रेम में पग गई हैं, अत: उनसे विमुख नहीं हो सकतीं। हमारी स्थिति उन चींटियों के समान हैं जो गुड़ पर आसक्त होकर उससे चिपट जाती है और फिर स्वयं को छुड़ा न पाने के कारण वहीं प्राण त्याग देती हैं।

(2) हमारैं हरि हारिल की लकरी।
मन क्रम बचन नंद-नंदन उर, यह दृढ़ करि पकरी।
जागत सोवत स्वप्न दिवस-निसि, कान्ह-कान्ह जकरी।
सुनत जोग लगत है ऐसौ, ज्यौं कुरूई ककरी।
सु तौ ब्याही हमकौं ले आए, देखी सुनी न करी।
यह तौ 'सूर' तिनहिं लै सौंपों, जिनके मन चकरी।।

उत्तर- भावार्थ- गोपियाँ उद्धव से कहती हैं कि हम निरंतर कृष्ण के ध्यान में उसी प्रकार निमग्न रहती हैं, जिस प्रकार हारिल पक्षी कहीं भी हो और किसी भी दशा में हो, सहारे के लिए अपने पंजों में कोई न कोई लकड़ी अथवा किसी तिनके को पकड़े रहता है। हमने अपने मन, कर्म और वचन से नंदनंदन कृष्ण को अपने हृदय में दृढ़ करके पकड़ लिया है। हमारा मन जागते, सोते, स्वप्नावस्था में, दिन-रात कृष्ण के नाम की रट लगाता रहता है अर्थात् कृष्ण के नाम का स्मरण ही हमारा एकमात्र ध्येय रह गया है। तुम्हारे योग की बातें सुनकर ऐसा लगता है जैसे हमने कोई कड़वी ककड़ी मुँह में रख ली हो, अर्थात् योग-ज्ञान की बातें हमारे लिए कड़वी ककड़ी के समान अरुचिकर एवं ग्रहण न करने योग्य हैं। तुम तो हमारे लिए योग रूपी एक ऐसी बीमारी लेकर आए हो जिसे हमने न तो कभी देखा है, न सुना है और न ही भोगा है। सूरदास कहते हैं, गोपियाँ उद्धव से कहती हैं कि ज्ञान-योग रूपी यह बीमारी तो तुम उन्हें प्रदान करो जिनका मन हमेशा चंचल रहता है।

गोपियों के कहने का भाव यह है कि योग का उपदेश अस्थिर चित्त वाले लोगों के लिए ही उपयोगी है। उनका हृदय तो पहले से ही कृष्ण के प्रेम में पूर्णतया स्थिर है।

(3)

नाथ संभुधनु भंजनिहारा। होइहि केउ एक दास तुम्हारा।।
आयेसु काह कहिअ किन मोही। सुनि रिसाई बोले मुनि कोही।।
सेवकु सो जो करै सेवकाई। अरिकरनी करि करिअ लराई।।
सुनहु राम जोहि सिवधनु तोरा। सहसबाहु सम सो रिपु मोरा।।

उत्तर–भावार्थ– शिव का धनुष टूटने पर मुनि परशुराम को अत्यंत क्रोधित हुआ देखकर श्रीराम विनम्रतापूर्व बोले–

हे नाथ! शिवजी के धनुष को तोड़ने वाला आपका कोई एक दास ही होगा। क्या आज्ञा है, मुझसे क्यों नहीं कहते? यह सुनकर क्रोधी मुनि क्रुद्ध होकर बोले– सेवक वह है जो सेवा का काम करे। शत्रु का काम करके तो लड़ाई ही करनी चाहिए। हे राम! सुनो, जिसने शिवजी के धनुष को तोड़ा है, वह सहसबाहु के समान मेरा शत्रु है।

(4)

मधुप गुन–गुना कर कह जाता कौन कहानी यह अपनी,
मुरझाकर गिर रहीं पत्तियाँ देखो कितनी आज घनी।
इस गंभीर अनंत–नीलिमा में असंख्य जीवन–इतिहास।
यह लो, करते ही रहते हैं अपना व्यंग्य–मलनि उपहास।

उत्तर–भावार्थ– कवि कहता है कि मन रूपी भौंरा गुनगुनाते हुए यह अपनी कौन–सी कहानी कह जाता है कि आज इतनी सारी घनी पत्तियाँ मुरझाकर गिर रही हैं। कवि के कहने का आशय यह है कि आज उसके मन में कुछ ऐसी पुरानी स्मृतियाँ आने लगी हैं जिससे उसका हृदय अत्यधिक दुख का अनुभव कर रहा है। कवि कहता है कि मन के इस अंतहीन विस्तार में जीवन की ऐसी अनगिनत घटनाएँ हैं जो बुरी तरह से निंदा करती हुई मेरी हँसी उड़ाया करती है।

(5) बादल, गरजो!
घेर घेर घोर गगन धाराधर ओ!
ललित ललित, काले घुँघराले,
बाल कल्पना के–से पालि,
वज्र छिपा, नूतन कविता
फिर भर दो–बादल, गरजो!

उत्तर– भावार्थ– कवि बादल को संबोधित करते हुए कहता है कि ऐ बादल, गरजो! वह पुन: कहता है कि ओ बादल! तुम अत्यधिक सघन होकर आकाश को चारों ओर से घेर लो, अर्थात् उमड़–घुमड़ कर चारों तरफ छा जाओ।

समाज में बदलाव की आकांक्षा रखने वाले कवियों को संबोधित करते हुए कवि कहता है कि ऐ नवजीवन का काव्य रचने वाले कवि! तुम बादलों में काले घुँघराले सुंदर–बालों की कल्पना करते हुए भी अपने हृदय में बिजली की कड़क और चमक धारण किए हुए अपनी नई कविता में बिजली के समान विप्लव छिपाकर क्रांति चेतना का स्वर भर दो। ऐ बादल गरजो।

(6) अट नहीं रही है
आभा फागुन की तन
सट नहीं रही है।

उत्तर– भावार्थ– फागुन के सौंदर्य का वर्णन करते हुए कवि कहता है कि फागुन की सुंदरता समा नहीं पा रही है। फागुन की कांति शरीर में सट नहीं पा रही है।

(7) छाया मत छूना
मन, होगा दुख दूना।
जीवन में है सुरंग सुधियाँ सुहावनी
छवियों की चित्र–गंध फैली मनभावनी,
तन–सुगंध शेष रहीं, बीत गई यामिनी,
कुंतल के फूलों की याद बनी चाँदनी।
भूली–सी एक छुअन बनता हर जीवित क्षण–

उत्तर– भावार्थ– कवि कहता है कि ऐ मन! छाया को मत छूना, अर्थात् बीत गए सुखद क्षणों को याद मत करना, नहीं तो दुख दुगुना हो जाएगा। जीवन में बहुत–सा रंग–बिरंगी सुंदर यादें हैं। सुंदर चित्रों की स्मृति के साथ उसके आस–पास मन को भाने वाली गंध भी फैली हुई है। तारों भरी चाँदनी रात बीत चुकी है, अब तो देह की सुगंध ही शेष रह गई है। बालों में लगे फूलों की याद चाँदनी बन गई है, अर्थात् सुखद समय बीत चुका है।, अब तो उसकी चाँदनी जैसी मधुर यादें ही बाकी रह गई है। उन सुखद क्षणों को भूलकर भी किया गया एक स्पर्श हर क्षण को पुन: जीवित कर देता है, अर्थात् यदि विगत सुखों को थोड़ा सा भी याद करने का प्रयास किया गया तो पुरानी सारी यादें सजीव हो उठेगी। इसलिए ऐ मन, बीते हुए सुखद क्षणों को याद मत करना, वरना दुख दुगुना हो जाएगा। भाव यह है कि विगत के सुखों को याद करने से वर्तमान का दुख और गहरा हो जाता है।

(8) माँ ने कहा पानी में झाँककर
अपने चेहरे पर मत रीझना
आग रोटियाँ सेंकने के लिए हैं
जलने के लिए नहीं
वस्त्र और आभूषण शाब्दिक भ्रमों की तरह
बंधन है स्त्री जीवन के
माँ ने कहा लड़की होना
पर लड़की जैसी दिखाई मत देना।

उत्तर– भावार्थ– कन्यादान के समय लड़की की माँ ने उससे कहा कि तुम ससुराल में पानी में अपने मुखड़े की परछाई देखकर उसकी सुंदरता से मोहित मत हो जाना। आग तो रोटी सेंकने के लिए होती है, जलने के लिए नहीं होती। कपड़े और गहने नारी जीवन के लिए बंधनस्वरूप होते हैं, जिस प्रकार शब्दों के भ्रम मनुष्य को बाँध लेते हैं।

भाव यह है कि स्त्री की सुंदरता और कोमलता उसे आत्मसंतुष्टि तो देती है परंतु उसी सौंदर्य की आड़ में समाज उसके लिए आचरण संबंधी विशेष नियम लागू कर देता है। उसे 'आदर्श' का नाम देते हुए नारी पर अनेक प्रतिबंध लगा दिए जाते हैं। इस प्रकार लुभावने शब्दों द्वारा भ्रमित करके स्त्री को बंधन में बाँध दिया जाता है। सुंदर कपड़े और गहने जैसी सजावटी वस्तुएँ वास्तव में स्त्री के जीवन में बंधन का ही कार्य करती है। माँ आग का उदाहरण देती हुई बेटी को समझाती है कि आग देखने में आकर्षक होती है परंतु रोटी सेंकने के लिए ही वह उपयोगी है। यदि वही आग हमें जलाने लगे तो वह हमारे लिए हानिकारक है। इसी प्रकार सौंदर्य ओर कोमलता यदि स्त्री को गरिमा और महत्ता दे, तभी उसकी उपयोगिता है। यदि वही उसके लिए बंधन का कारण बन जाए तो वह उसके लिए निरर्थक है। ऐसी सुंदरता पाकर प्रसन्न होना मूर्खता ही है।

माँ अपनी बेटी से कहती है कि तुम लड़की होते हुए भी लड़की जैसी मत दिखाई देना, अर्थात् स्त्री–सुलभ सौंदर्य और कोमलता की स्वामिनी होते हुए भी तुम दुर्बलता मत प्रकट करना। समाज द्वारा नारी के लिए गढ़े गए आदर्शों के अनुचित बंधन को स्वीकार मत करना। ❑